मनसा सेवा - 88

अव्यक्त बापदादा :- (15/12/2001)

➳ _ ➳ जिम्मेवारी का ताज पहनना है ना! टीचर्स ने तो जिम्मेवारी का ताज पहना हुआ है ना! अभी उसमें यह एड करना, ठीक है ना! डबल फारेनर्स हाथ उठाओ। यह जिम्मेवारी का ताज अच्छा लगता है, तो ऐसे हाथ उठाओ। टीचर्स भी हाथ उठाओ आपको देखकर सबको प्रेरणा मिलेगी। तो चार्ट रखेंगे? अच्छा, बापदादा अचानक एक दिन पूछेगा, अपनाहै। अपने परिवार का दु:ख, परेशानी आप देख सकते हो! देख सकते हो? दु:खी आत्माओं को अंचली तो दो।

➳ _ ➳ जो आपका गीत है - एक बूंद की प्यासी हम. आज के समय में सुख शान्ति के एक बूंद की प्यासी आत्मायें हैं। एक सुख शान्ति के अमृत की बूंद मिलने से भी खुश हो जायेंगी। बापदादा बार-बार सुनाते रहते हैं - समय आपका इन्तजार कर रहा है। ब्रह्मा बाप अपने घर का गेट खोलने का इन्तजार कर रहा है। प्रकृति तीव्रगति से सफाया करने का इन्तजार कर रही है। तो हे फरिश्ते, अभी अपने डबल लाइट से इन्तजार को समाप्त करो।

➳ _ ➳ एवररेडी शब्द तो सब बोलते हो लेकिन सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी बने हो? सिफ शरीर छोड़ने के लिए एवररेडी नहीं बनना है, लेकिन बाप समान बनकर जाने में एवररेडी बनना है। अभी वाणी और मनसा सेवा के बैलेन्स में बिजी हो जायेंगे तो ब्लैसिंग बहुत मिलेगी।

➢➢ कौन सी जिम्मेवारी का ताज पहनना है?

➳_ ➳ मनसा सेवा की जिम्मेवारी का

➳_ ➳ संसार की आत्माओं के दु:ख दर्द, परेशानी को समाप्त करने का ताज

ताज

→ एक है जिम्मेवारी मुझे करना है...

→ एक है कैसे हम प्रतिक्रिया करते हैं... Ability to response…

■ जितनी जिम्मेवारी लेंगे, उतनी शक्तियां मिलेंगी...

▶ हमारे कदम केवल दुनिया को उपदेश देने के लिए न हो...

▶ स्वयम को गहराई से जिम्मेवार समझना है...

➢➢ हम जिम्मेवार हैं...

➳_ ➳ अपने एक एक बोल के

➳_ ➳ अपने एक एक संकल्प के

➳_ ➳ अपने एक एक कर्म के

→ संसार में इतने दु:ख है...

■ मधुबन में आकर वहा के पवित्र वायब्रेशन से कुछ समय के लिए वे दुख कम हो जाते हैं..

▶ जितना ये भाव प्रगाढ़ होगा कि मैं जिम्मेवार हूँ...

▶ जिम्मेवार होने से मुक्ति होगी...

➢➢ हमारे संकल्प ही यग्य में सुरक्षा कवच हैं...

➳_ ➳ यग्य का इतिहास, संघर्ष जिन आत्माओं को पता ही नहीं...

→ उनकी पालना हमारे संकल्पों द्वारा ही होगी...

➢➢ हम अभ्यास करते हैं मैं मास्टर मुक्तिदाता हूँ. . .

➢➢ आधार मूर्त हूँ...

➢➢ उद्धार मूर्त हूँ..

➢➢ मैं मुक्त हूँ...

➳_ ➳ क्या उस मुक्ति का हमने अनुभव किया है...

➳_ ➳ क्या हम मुक्त हुए हैं इमोशनल बंधनों से...

→ कोई आत्मा न हमें याद करे, न हम किसी को याद करे...

→ कोई आत्मा न हमें मिस करे, न हम किसी को मिस करे...

■ यदि कोई हमें करता है तो हमने ही उसे अवसर दिया है...

▶ जो हम कह रहे हैं... उसका हम स्वरूप हों...

➢➢ पुरुषार्थ की बात सुनते रोज हैं...

➳_ ➳ पर करना क्या क्या है... ये प्रश्न रह जाता है...

➳_ ➳ बाबा तो कह रहे हैं... पर मुझे क्या करना है...

→ उपदेश, किताबे, क्लासेज बहुत हैं, पर उनमे मेरे करने के लिए क्या है...

■ वो करो जो करने आये थे...

■ क्या करने आये थे और क्या कर रहे हैं...

▶ जिस स्थान पर मैं हूँ..

▶ जैसी परिस्थिति है...

▶ जैसी बुद्धि है...

▶ जैसा पास्ट है... उसमे मुझे क्या करना है...

➢➢ एडवांस पार्टी, ब्रह्मा बाबा इंतज़ार कर रहे हैं...

➳_ ➳ जो हमारा इंतजार कर रहे हैं... उनका इंतज़ार ख़त्म करो...

→ रास्ते में हमारा कोई इंतज़ार करता है तो हम जल्दी जाने की कोशिश करते हैं...

- प्रवचन से आत्मा को नहीं जाना जा सकता ...
  - गहराई में जाना होता है...
  - यदि हम गहरे नहीं जाते तो वे केवल शब्द रह जाते हैं...

➢➢ एवररेडी

➳_ ➳ केवल शरीर छोड़ने के लिए नहीं...

→ संपन्न बनने के लिए तैयार...

→ अभी अभी भगवान कहे चलने को... क्या हम तैयार हैं...

- ऐसी स्थिति है?
- ऐसी निर्लिप्त, अलिप्त स्थिति है?
  - इसकी प्रैक्टिस अभी से करनी है...

➢➢ सिर्फ कहना हम तैयार हैं और एवररेडी रहने में फर्क है...

➳_ ➳ क्या हम सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार है?

→ ऐसी नष्टोमोहा स्थिति है?

→ हम गये संसार हमारे लिए ख़त्म...